आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 1/मार्च 2025
Received: 15/3/2025; Reviewed: 18/3/2025; Accepted: 20/3/2025; Published: 25/3/2025

शिवमूर्ति के कथा साहित्य में ग्रामीण आंचलिक की पृष्ठभूमि

[1]शोधार्थी - प्रतिभा पाल
नेट, जे०आर०एफ०
डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय
अयोध्या, उ० प्र०
(जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल पी० जी० कॉलेज, बाराबंकी)

[2]शोध निर्देशक – डॉ. शार्दूल विक्रम सिंह,
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय
अयोध्या, उ० प्र०
(जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल पी० जी० कॉलेज, बाराबंकी)

[1]प्रतिभा पाल, [2]डॉ. शार्दूल विक्रम सिंह, शिवमूर्ति के कथा साहित्य में ग्रामीण आंचलिक की पृष्ठभूमि, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 1/मार्च 2025**,(32-40) https://doi.org/10.5281/zenodo.15091450

अनुरूपी लेखक - [1]शोधार्थी - प्रतिभा पाल, जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल पी० जी० कॉलेज, बाराबंकी,
सह-लेखक - [2]शोध निर्देशक - डॉ. शार्दूल विक्रम सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल पी० जी० कॉलेज, बाराबंकी।

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

सारः

शुरुआत से ही कहानी लेखन के क्षेत्र में प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराने वाले शिवमूर्ति की कहानियों ने हिंदी कहानी में कहानी का स्वाद फिर से लौटा दिया। यह गांव स्वयं शिवमूर्ति की प्रकृति की भूमि है। इसी पर

केन्द्रित होकर उनका कथावाचक दूर-दूर तक मंडराता रहता है। उनकी कहानियों में ग्रामीण जीवन का ऐसा परिदृश्य झलकता है कि पढ़ते-पढ़ते हम खुद को उसी परिवेश में ले जाते हैं। उनके प्रत्येक पात्र में गांव की मिट्टी की खुशबू मिलती है और भाषा मुहावरेदार भावों से भरपूर है, जिसका इतना अच्छा रिस्पॉन्स किसी अन्य कहानीकार में देखने को नहीं मिलता। हिंदी कथा साहित्य में शिवमूर्ति एक ऐसा नाम है, जो न केवल अपने एक अलग पहचान रखता है, बल्कि सामाजिक जीवन की गंभीर चिंताओं और संवेदनाओं की भी विशेष रचना करता है। संसार का उनका अनुभव सघन और वर्तमान समय और समाज से जुड़ा हुआ है। यह शिवमूर्ति के अनुभव का ही कमाल है कि वह इन लोक शब्दों को कथा साहित्य में बहुत बारीकी से पेश करते हैं, खासकर गुलाबी दुनिया के पाठकों तक।

मूल शब्दः शिवमूर्ति, साहित्य में ग्रामीण, चेतना, पृष्ठभूमि

प्रस्तावना:

शिवमूर्ति ग्रामीण समाज के कथाकार हैं। दरअसल, जब कोई भी व्यक्ति कहानीकार बनने के लिए कलम पकड़ता है तो सबसे पहले वह अपना अनुभव लिखता है। शिवमूर्ति को अपने ग्रामीण जीवन का इतना अनुभव है कि शिवमूर्ति उन्हें लिखते हैं। उनके पास गांव की पूरी दुनिया है, इसमें कई कहानियां हैं, कहानी से कहानियाँ निकल रही हैं, मेले-गाड़ियाँ, नदी-नाले, तालाब पोखर, जीव-जंतु, दादी-नानी, मामा-मामी, घर-परिवार आदि। शिवमूर्ति ने इन सबको करीब से देखा, अनुभव किया, महसूस किया।

उनका रचनात्मक व्यक्तित्व ग्रामीण परिवेश में विकसित हुआ। दरअसल, ग्रामीण परिवेश में पले-बढ़े और उसी में रचे-बसे कथाकार हैं। डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी के अनुसार "शिवमूर्ति ग्रामीण जीवन के विश्वसनीय कथाकार हैं। उन्होंने किसी साहित्यिक प्रवृत्ति या साहित्यिक आकांक्षा के तहत किसान जीवन को अपनी रचना का विषय नहीं बनाया है। वे ग्रामीण एवं किसान जीवन के सहज रचनाकार हैं। उनका व्यक्तित्व, रहन-सहन, बोली-भाषा सब कुछ ग्रामीण और किसनी है। एक आंतरिक झटके के साथ वे जितने दृढ़ निश्चयी हैं उतने ही सौम्य भी हैं। ऐसा भी लगता है कि उन्हें अपनी लेखनी पर भरोसा है इस आत्मविश्वास का आधार निर्मित वस्तु का गहरा, सूक्ष्म और व्यापक ज्ञान, व्यक्तिगत प्रत्यक्ष जानकारी है। मुक्तिबोध इसे सृजन का पहला झण कहते हैं।

शिवमूर्ति के मन में कथाकार का बीजारोपण बचपन में ही हो गया था। बचपन की यादें जीवन भर व्यक्ति के साथ रहती हैं। उस समय अनुभव की पोटली बिल्कुल खाली रह जाती है। इसमें जो अनुभव सबसे पहले आते हैं वे पूर्णतया 'फर्सर्ट हैण्ड' अनुभव होते हैं। अनुभव चाहे बहुत अच्छे हों या बहुत गहन, उनका अपना

अतिरिक्त महत्व होता है। फिर आप बड़े होते जाते हैं, अपने आप को अनुभवों से भरते जाते हैं। लेकिन आप हर दूसरे-तीसरे-चौथे या नये अनुभव को पिछले अनुभवों से तौलते हैं। यह एक सहज प्रक्रिया है इसीलिए हर रचनाकार अपने बचपन और किशोरावस्था के दिनों को शिद्दतसे याद करता है। शिवमूर्ति कहते हैं, "बचपन और किशोरावस्था में दिमाग की स्लेट साफ-सुथरी और नवीन सुंदर रहती है। उस समय का देखा-सुना आज भी पूर्णतया जीवंत एवं उज्ज्वल रूप में संरक्षित है। शायद यही वह उम्र होती है जब लेखन का बीज मन में रोपित होता है और अंकुरित होता है। शिवमूर्ति ने रचनाकार के इन बीजों को अपनी अनुभूति और अनुभव से सींचा है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिवमूर्ति ने अपनी रचनाओं में जिन ग्रामीण समाज के पात्रों और ग्रामीण जीवन की समसयाओं को व्यक्त किया है, वे उनके व्यक्तिगत जीवन में अनुभव किये गये यथार्थ और ग्रामीण समाज में होने वाली घटनाओं का प्रतिबिंब हैं। कमल नयन पांडे शिवमूर्ति के बारे में कहते हैं, एक भोगी के रूप में वह खोई हुई जीवन-स्थितियों को स्वयं अनुभव करके आत्म-बोध प्राप्त करता है। अर्थात सरल अनुभूति, एक 'दृष्टा' के रूप में, वह स्वयं खोई हुई जीवन-स्थितियों का अनुभव करते हुए, खोए हुए लोगों को देखकर 'आत्म-बोध' प्राप्त करता है। 'आत्मानुभूति' और 'सहानुभूति' के इसी जंक्शन पर शिवमूर्ति का कहानीकार उत्थान और आकार पाता है। संभवतः इसीलिए शिवमूर्ति की कहानियों में समकालीन गाँव और देहाती जीवन का विशिष्ट और ठोस यथार्थ व्यक्त हुआ है। शिवमूर्ति की कहानियाँ तेजी से बदलते गाँव की स्पष्ट झलक देती हैं। आज बदलते गंवई लोगों के नए सपने, इरादे, प्राथमिकताएं उनकी कहानियों में पढ़ी जा सकती हैं। आज गंवई समाज में पारस्परिकता टूट रही है। आत्मकेन्द्रितता बढ़ रही है। मानवीय संवेदना लुप्त होती जा रही है। परोपकारी मन लुप्त होता जा रहा है। भ्रष्टाचार सुरक्षित रूप में बढ़ रही है। मानवीय संवेदना लुप्त होती जा रही है। परोपकारी मन लुप्त होता जा रहा है। भ्रष्टाचार सुरक्षित रूप में बढ़ रहा है। कहीं अराजकता बढ़ रही है तो कहीं असुरक्षा के कारण अवसाद बढ़ रहा है। बहुआयामी पतन के नित नये कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं। शिवमूर्ति की कहानियाँ इन सभी भयावह स्थितियों और त्रासद परिणामों के लिए जिम्मेदार कारकों और कारकों की स्पष्ट पहचान करती हैं। डॉ. शभूनाथ ने लिखा है, "काल्पनिक कथा वस्तुतः यथार्थ और अवास्तविक के बीच का एक रमणीय खेल है, जो मानव सभ्यता के आरंभ से ही चला आ रहा है।" शिवमूर्ति ने अपने कथा साहित्य में ग्रामीण समाज का प्रतिनिधित्व किया है। दरअसल, प्रेमचंद, रेनू, राही मासूम रजा और नागार्जुन के बाद भारतीय समाज और साहित्य में भारतीय किसानों के अभिशप्त जीवन को चित्रित करने वाली कहानियों का आगमन कम हो गया। आजादी के बाद नई कहानियों के कथाकार आए। ये सभी कहानीकार मध्यवर्गीय भारतीय समाज से आते हैं। उनके पिता सरकारी नौकरी करते थे और शहरों में रहते थे। इसलिए ये सभी बचपन से ही शहरों में रहते थे। यहीं उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई। इसीलिए नई कहानियों में गांव पीछे छूट गए।

आंचलिक उपन्यास की अवधारणा

आंचलिक उपन्यास साहित्यिक कार्यों को संदर्भित करते हैं जो एक विशिष्ट क्षेत्र में स्थापित होते हैं और उस क्षेत्र के सामाजिक मानदंडों, परंपराओं और इतिहास को दर्शाते हैं। ये उपन्यास अक्सर स्थानीय भाषा या क्षेत्र की बोली में लिखे जाते हैं और वहां रहने वाले लोगों के जीवन, रीति-रिवाजों और मूल्यों के अनूठे तरीके को दशार्त हैं, आंचलिक उपन्यास कई देशों की साहित्यिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और उन्होंने राष्ट्रीय साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उदाहरण के लिए, भारत में मराठी, बंगाली, तमिल और तेलुगु जैसी विभिन्न भाषाओं में कई क्षेत्रीय उपन्यास लिखे गए हैं, जिन्हें स्थानीय संस्कृति और परंपराओं के चित्रण के लिए मान्यता मिली है आंचलिक उपन्यास पाठकों को विभिन्न क्षेत्रों और उनके लोगों के बारे में जानने का अवसर प्रदान करते हैं। वे पाठकों को क्षेत्र के रीति-रिवाजों और प्रथाओं में खुदा को डुबो ने की अनुमति देते हैं, और जीवन के स्थानीय तरीके की गहरी समझ हासिल करते हैं। इसके अलावा, क्षेत्रीय उपन्यास अक्सर प्यार, परिवार और रिश्तों जैसे सार्वभौमिक विषयों को संबोधित करते हैं, जिससे वे व्यापक दर्शकों के लिए प्रासंगिक हो जाते हैं। हिंदी में आंचलिक उपन्यास की परंपरा "मैला आंचल सन् 1954 के साथ शुरू होती है। "मैला आंचल के साथ कई प्रश्न सामने आकर खड़े हो जाते हैं। पहला प्रश्न है कि क्या हिंदी में आंचलिक उपन्याासों का प्रारंभबहुत पहले हो चुका था? कुछ विद्वान हिंदी का पहला आंचलिक उपन्यास नागार्जुन की 'रतिनाथ की चाची', 'रामलाल' 1914 तथा 'बलचनमा' उपन्यास को 'मैला आंचल' से पूर्व प्रकाशित रचना के रूप में स्वीकारते हैं। परंतु यह कहां तक उचित है, यह ध्यातव्य है। इसका कारण यह भी है कि 'मैला आंचल' की तरह इन सभी को स्वरूप अधिक परिष्कृत नहीं था। मूलतः स्वाधीनता के पश्चात इस ओर लेख्कों, पाठकों एवं गाँव के लोगों की दृष्टि गयी। चूँकि भारत एक गाँव है, सर्वस्वीकृत है। गांधी जी ने प्रारंभ में ही अपने विचार दिए थे कि चूँकि भारत एक गाँव है, अतः इसके विकास की प्रक्रिया एवं नीति भी इसी रूप में होनी चाहिए। शासन सत्ता, सरकारें एवं विरोधी दल सभी अपने को अधिक सक्षम, शक्तिशाली बनाने के लिए गाँवों का नाम एवं सहयोग लेते आये हैं। स्वतन्त्रतापूर्व अधिकाधिक रचनाकार ग्रामीण क्षेत्रों से ही अधिक जुड़े हुए थे। गाँव से जुड़े हुए तमाम अनुभव इनके पास पहले से ही इनकी अमूल्य थाती के रूप में संचित थे। इसलिए उन्होंने केवल ग्राम जीवन के सत्य को ही उजागर नहीं किया। वरन उन्होंने अपने अपने अंचलों के विशिष्ट गावों को सम्मानित भी किया है। गांव की किसी एक समस्या को लेने के स्थान पर उन्होंने समग्र समस्याओं को उद्घाटित करना चाहा। इस प्रकार कथ्य की नवीनता लिए हुये एक विशेष प्रकार के उपन्यासों का जन्म हुआ। इसी प्रकार के उपन्यासों को आंचलिक उपन्यास कहा गया। अनेक आलोचकों ने उपन्यास की नवीनता को पहचाना और

उनकी ग्रामोन्मुखता को रेखांकित कर दिया। नंददुलारे बाजपेयी ने कहा है कि "आंचिलक उपन्यास वह है जिनमें अविकसित प्रदेश के आदमियों अथवा आदिम जपतियों का विशेष चित्रण किया गया हो।"

साहित्य समीक्षा

ममता कुमारी (2021) समकालीन कलाकारों में ऐसे कलाकार थे, जिन्होंने सांसों और उच्छ्वासों में उत्तर भारत के हरे-भरे जीवन की समग्रता को एक साथ प्रस्तुत किया। आर्थिक संकट से जूझ रहे परिवार और सामी की रचनाओं में कला की भावना भरी हुई थी। उन्होंने रचनाओं के केन्द्र में किसी न किसी निकाय को रखा। उनकी कनानी, 'कसाईवाड़ा', 'वतिरा चिरतार', 'खाबिया, ओ मेरेयर, 'केशरकस्तूरी', 'कुच्ची का कानून' और उयस 'विशुया', और 'अथखारी चयांग' उनकी आध्यात्मिक चेतना को दर्शाते हैं। नोटी नई, आर्थिक तंगी के बाद भी वह परिवार नहीं छोड़ते। व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर, प्रणाम एक व्यापक धर्मिक अनुष्ठान का अनुवाद करता है। थशिमुवति का करथा सवंत में भातभभ कता परिवार वनिश्चनि भानुकरनि ने।

सुनीता (2022) मैला आँचल फणीश्वरनाथ रेणु जी का प्रसिद्ध उपन्यास है। यह 1954 में प्रकाशित हुआ। मेरीगंज गांव की कहनी के बहाने लेखक ने उत्तर भारत के संपूर्ण गांवों का चित्रण किया है। गांव में जातिगत एवं लिंगगत भेदभाव को दर्शाया है। मैला आँचल में नारी के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। वर्तमान समय में 21वीं सदी में भी इन समस्याओं में मूलभूत परिवर्तन नहीं आया है। आज भी अखबारों में खबर देखने को मिल जाती है कि, महिला को डायन कहकर मारा गया। अंधविश्वासों में भी कोई खास कमी नहीं आई है। कोरोना महामारी के दौरान हमने कोरोना माई की पुजाई करते हुए खबरों को देखा व सुना। आज भी गांव में नारी का शोषण किया जा रहा है। कबीरपंथी मठों के बहाने धार्मिक स्थानों की व्यवस्था का चित्रण लेखक ने किया है। आज भी तथाकथित आरमों में बाबाओं द्वारा छोटी-छोटी बालिकाओं का यौन शोषण जारी है। शिक्षा द्वारा ही स्थिति को बदला जा सकता है। विशेषतौर पर स्त्रियों की शिक्षा।

सुमन (2021) आधुनिक युग में 'आंचलिकता' नवीन विधाओं के सन्दर्भ में एक दिशा की उपलब्धि है। व्यष्टिसत्य और समष्टि उपन्यास के धरातल पर सत्य का विकास दो रूपों में हुआ है। मार्कट्र्स, फ्रायड, एडलर, जंग, सार्व आदि की वैचारिक भूमिका पर लोगों ने व्यक्तिगत सत्य को स्वीकार किया है तो 'क्षेत्रवाद' ने सामूहिक सत्य की चुनौती को स्वीकार किया है। उपन्यास के सन्दर्भ में 'जोन', 'जोन' और 'जोन' आदि शब्दों पर विचार करना आवश्यक है। 'आँचल' शब्द संस्कृत की 'अंच' धातु में 'अल्च' प्रत्यय के योग से बना है। भौगोलिक सीमाओं से घिरे जिले को 'क्षे' की संज्ञा दी जा सकती है। वस्तुतः 'क्षेत्र' शब्द किसी स्थान विशेष का सूचक है। 'आँचलिक' शब्द संस्कृत व्याकरण के अनुसार सिद्ध नहीं हो सकता। आंचलीय,

आचलता, अचलत्व आदि शब्द 'आंचल' से बनने चाहिए, परंतु इन शब्दों के स्थान पर 'आंचलिक' शब्द सर्वमान्यएवं प्रचलित हो गया है। 'आंचलिकता' शब्द अभिव्यंजक है।

महत्व

भारत गाँवों का देश है। अस्सी प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है। भारतीय संस्कृति का आधार ही ग्रामीण जीवन है। हिन्दी कथा-साहित्य में ग्राम-कथा की परंपरा प्रेमचन्द के 'गोदान' से आरम्भ होता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ग्रामीण जीवन पर अनेक लेखन कार्य हुए हैं। 'मैला आंचल' रेणु जी के ख्याति कृति है। स्वतंत्रता पश्चात् भी गांवों में गरीबी, अभाव, दरिद्रता, विपन्नता, अंधविश्वास, परंपरा, छूआछुत, जातिवाद और स्त्री के अधिकारों का हनन समाप्त नहीं हुआ था। इन सभी समस्याओं को आधार बनाकर ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित कथासाहित्य का सजग आरम्भ हुआ। ग्रामीण जीवन को चित्रित करने वाले कथाकारों पर स्वाधीनता के पश्चात विकसित नए प्रगतिशील विचारों का प्रभाव था। उन्होंने उस ग्रामीण समाज की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का यथार्थवादी वर्णन किया। इस यथार्थवादी वर्णन में स्त्री, दलित, पिछड़े और किसानों से जुड़ी सभी समस्याओं का विश्लेषण देखने को मिलता है। अस्सी के दशक में ग्गाम कथा पूर्णतः गाँव विशेष और उसके यथार्थ रूप को लेकर लिखी जाने लगी। ग्रामीण संस्कृति के सभी तत्व हिन्दी कथा के लेखन का आधार बने। 'यथार्थवाद' वह साहित्यिक संश्लेषण है जो रचना के माध्यम से अपने विचारों को समुन्नत रूप में पाठक के समक्ष रखते हैं। यथार्थवाद के बारे में प्रेमचन्द की धारणा यह थी कि चरित्रों को पाठक के सामने उनके उसी रूप में रखा जाना चाहिए। शिवमूर्ति हमारे समय के महत्वपूर्ण कथाकार हैं। ये महानगरीय जीवन के नहीं ग्रामीण जीवन के कथाकार हैं। उनकी कहानियों में ग्रामीण परिवेश से जुड़ी स्त्री समस्याएं जीवंत रूप में चित्रित हैं। शिवमूर्ति की कहानियों में ग्रामीण जीवन की विषमताएं एवं अंतर्विरोध अपने नग्न यथार्थ के रूप में अभिव्यक्त हुआ है। जहां जाति व्यवस्था की गहरी जड़े मानवीय संबंधों को छिन्न-भिन्न करती दिखाई देती हैं। जहां स्त्री एवं दलित वर्ग को अधिक यातनाओं एवं विवशताओं से लगातार जूझना पड़ता रहा है। ऐसी विपरीत दशाओं का उल्लेख शिवमूर्ति की कहानियों "तिरिया चरित्र", "अकालदंड", "कसाइबाड़ा" में देखा जा सकता है। इन कहानियों में स्त्रियाँ विमली सरकारी तंत्र का व्यवहार, कानून, शनिचरी के साथ समाज और उसके ऊपर शोषण हेतु आजमाए जाने वाले विविध हथकंडे, ग्रामीण जीवन से जुड़े कटु यथार्थ सभी को सामने लाने का भरसक प्रयास किया है।

शिवमूर्ति ग्रामीण जीवन

शिवमूर्ति ग्रामीण जीवन के विश्वसनीय कथाकार हैं। उन्होंने किसी साहित्यिक प्रवृत्ति या साहित्यिक आकांक्षा के तहत किसान जीवन को अपनी रचना का विषय नहीं बनाया है। वे ग्रामीण एवं किसान जीवन

से भली-भांति परिचित हैं। उनका व्यक्तित्व रहन बोली बानी- सब कुछ ग्रामीण और किसान, एक आंतरिक व्यक्तित्व के साथ। आप जितने अधिक विनम्र होंगे, आप उतने ही अधिक दृढ़ निश्चयी होंगे। ऐसा भी लगता है कि उन्हें अपनी लेखनी पर भरोसा है इस आत्मविश्वास का आधार निर्मित वस्तु का गहरा, सूक्ष्म और व्यापक ज्ञान है। व्यक्तिगत प्रत्यक्ष जानकारी 'कसाई बाड़ा और 'तिरिया चरित्तर' से लेकर 'आखिरी छलांग' तक का परिदृश्य समकालीन भारत का वास्तविक स्वरूप हे। परिवार, पुलिस थाना, कोर्ट, कोर्ट, महिला, दलित, किसान, धर्म, साम्प्रदायिकता, खेती, नौकरी, कुल मिलाकर जो तस्वीर बनती है वह बदसूरत और दागदार है। रिश्तेदार गीदड़ों से भरे हैं थाना दरोगा की असली तस्वीरे कई कहानियों में हैं शिवमूर्ति ने झूठ को विभिन्न रूपों में दर्शाया है और बताया है कि यह सर्वत्र फैला हुआ है। ज बवह (शिवमूर्ति) सेमिनारों में बोलते हैं, तो उनका सरल पूर्वी गंवई आदमी का लबादा उतर जाता है और हमें अपना एक बुद्धिमान और सुलझा हुआ बुद्धिजीवी मिलता है, जिसका अध्ययन, मनन और चिंतन कुंद और वस्तुनिष्ठ होता है। हां, उन्हें कटु आलोचना, चुगली करना और किसी को नीची दृष्टि से देखने की लत नहीं है। वैसे भी वे साहित्यकारों के एक को छोड़कर सभी स्वाभाविक व्यवसायों से कोसों दूर हैं। इस हातिमताई की एक ही कमजोरी है नारी सौंदर्य के प्रति अदम्य आकर्षण किसी सुन्दर स्त्री को देखकर वे म नही मन झुक जाते हैं। रचनाकार की किसी अद्वितीय कृति की सराहना न करना उनकी दृष्टि में अक्षम्य अपराध है। शिवमूर्ति की कहानियाँ अपनी विषयवस्तु और कथ्य के कारण अधिक सराही गयी है। शिवमूर्ति ने अपनी कहानियों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि कहानी वह चीज है जिसके माध्यम से विषयवस्तु पाठक की आत्मा तक पहुँचती है और उसे रोमांच और सौंदर्य से भर देती है। फिर पाठक को ऐसी बेचैनी और तनाव में ले जाएं कि उसकी नींद उड़ जाए, यकीन मानिए, तिरिया के चरित्र की कहानी पढ़ने के बाद मे। और मेरी पत्नी उस रात ठीक से सो नहीं सके। शिवमूर्ति में सदैव प्रेम और स्नेह की वह गहरी भावना रही है, जो उनकी कहानियों में न केवल मनुष्यों के प्रति छलकती दिखाई देती है, बल्कि मनुष्येत्तर प्राणियों के प्रति भी स्नेह और स्नेह की कोई कमी नहीं है।

इस संदर्भ में शिवमूर्ति अपने समकालीनों में ऐसे अनूठे कथाकार हैं जिनमें संवेदना की अनंत गहराई है। इसका प्रमाण उनकी कहानियों में सहज ही उपलब्ध है। शिवमूर्ति अपने समय के सबसे महत्वपूर्ण कहानीकारों में से एक हैं। किसी भी नए हिंदी पाठक या अहिंदी भाषी पाठक को अगर शुरुआत में ही शिवमूर्ति की कहानियां पढ़ने को मिल जाएं तो उसे हिंदी साहित्य से प्रेम हो जाएगा। उनकी सभी कहानियाँ जीवन के अनुभवों से छनकर आई हैं, इसलिए उन्हें पढ़कर आप एक ही समय में आश्चर्यचकित, दुखी और उत्साहित होकर निखर उठते हैं। आप अचंभित रह जाते हैं क्योंकि उनके द्वारा फैलाई गई संवेदना का सार आपे अंदर गहराई तक उतर जाता है। आप चमकते हैं क्योंकि साहित्य, कला आपको ऊपर उठाती है। उनकी कहानियों से आप अपने समकालीन समाज को समझ सकते हैं कई लोग राजनीति, गरीबी, जातिवाद,

चालाकी और शोषण के रंगों ओर तरीकों से अवगत हो जाते हैं। शिवमूर्ति जिस कथा क्षेत्र से आते हैं, वहां उनका किसी से कोई मुकबला नहीं है। फिलहाल वह वहां अकेले राज करते नजर आ रहे हैं।

निष्कर्षः

शिवमूर्ति के उपन्यास और कहानियाँ यह साबित करती हैं कि हिंदी कथा साहित्य प्रेमचंद की परंपरा को नहीं भूला है। शिवमूर्ति भारतीय ग्रामीण जीवन की अनेक त्रासदियों के कथाकार हैं, एक ओर उनकी कहानियों में ग्रामीण महिलाओं पर होने वाली अपार यातनाओं का दर्द है तो दूसरी ओर उपन्यास में किसान जीवन की तबाही के कारणों और रूपों की पहचान है। किसानों की आत्महत्या की समस्या उनके उपन्यास आखिरी छलांग की केंद्रीय समस्या है। गहरी अंतर्दृष्टि और उचित दृष्टिकोण के अभाव में समाज और राजनीति के बड़े-बड़े मुद्दे भी सरल बनकर रह जाते हैं। वहीं, शिवमूर्ति का उपन्यास 'त्रिशूल' इस बात का उदाहरण प्रस्तुत करता है कि कैसे सामान्य सतही सच्चाइयों को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य मिल जाता है। शरीर से क्षीण होने के बावजूद शिवमूर्ति ने रोजमर्रा की घटनाओं के माध्यम से सांप्रदायिकता और सामाजिक न्याय के मुद्दे को प्रामाणिक अभिव्यक्त दी है। उपन्यास में महमूद की त्रासदी भारतीय समाज के धर्मनिरपेक्ष मॉडल की त्रासदी है.यह उपन्यास बाबरी मस्जिद से जुड़ी घटनाओं और मंडल आयोग की पृष्ठभूमि पर केंद्रित है, साझा भारतीय जीवन में संस्कृति और समुदाय। वह जिंदगी में आई दरार को बेहद बेबाकी से उजागर करती है उपन्यासकार ने वर्णाश्रम व्यवस्था और ब्राह्मणवादी संस्कृति की निम्न सच्चाइयों को उजागर करने के साथ-साथ नई शक्तियों के उद्भव का संकेत भी दिया है।" शिवमूर्ति की लोक भाषा, लोक मुहावरे लोक जीवन में गहराई तक रचे-बसे हैं। उनके ये सभी गुण त्रिशूल में नये अर्थों के साथ विद्यमान हैं। शिवमूर्ति ने 1990 के दशक में जो गाँव बसाए, वे ऑस्ट्रेलियाई गाँव नहीं है। वे आज के गाँव हैं। उनकी कहानियों में जनता की निराशा, संघर्ष, आजीविका और आक्रोश वास्तविक रूप में आया है, जो बहुत कम लेखकों के कथा साहित्य में मिलता है..... शिमूर्ति के कथा साहित्य को किसी अनुशंसा की जरूरत नहीं है। उनका योगदान ग्रामीण और निम्न वर्ग के उन चरित्रों को ऊपर उठाने में है, जिन्हें अन्य लोगों ने नहीं उठाया।

सन्दर्भः

1. मिश्र डॉ. रामदरश- हिन्दी गद्य साहित्य: उपलब्धि की दिशाएँ नॉर्थ इण्डिया पब्लिशर्ज एण्डडिस्ट्रिब्यूटर्स, दिल्ली।

2. डॉ. नगेन्द्र- हिन्दी साहितय का इतिहास मयूर पैपरबैक्स, दिल्ली सिंहा विद्या- आधुनिक परिदृश्य आँचलिकता और हिन्दी उपन्यास वाणी प्रकाशन, दिल्ली गोपालराय - हिन्दी उपन्यास का इतिहास राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. सिंह विजय बहादुर – उपन्यास: समय और संवेदना वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
4. डॉ. जैन बीना- बदलते परिप्रेक्ष्य और हिन्दी उपन्यास संजय प्रकाशन, दिल्ली।
5. डॉ. भारद्वाज हेतु, डॉ. सुमनलला - हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
6. डॉ. पाटिल पांडुरंग, डॉ. काशिद गिरीश - नवम दशक के आँचलिक उपन्यास, दिव्य डिस्ट्रिब्यूटर्स, कानपुर।
7. सिंह विजय बहादुर - नागार्जुन का रचना संसार, संभावना प्रकाशन, हापुड़।
8. डॉ. नागर विमल शंकर- हिन्दी के आँचलिक उपन्यास : सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ प्रेरणा प्रकाशन, मुरादाबाद।
9. वर्मा धीरेन्द्र- हिन्दी भाषा और लिपि हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद।
10. वर्मा लालिमा - फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों की भाषा का शैलीशास्त्रीय अध्ययन, जानकी प्रकाशन, पटना।

****